आचार्य प्रवर श्री आनन्दऋषि अभिनन्दन ग्रन्थ(फोल्डर नं. ९१२०१३)

मुख्य टाईटल

प्रकाशकीय ----------३

सम्पादकीय ---------- ५

शुभ कामनाएं एवम सन्देश

मेरे गुरुदेव ---------- ३७

विषयानुक्रम ---------- ४४

प्रथम-खण्ड - आचार्य प्रवर श्री आनन्दऋषिजी व्यक्तित्व

एक ईन्द्रधनुषी व्यक्तित्व---------- ४

अपनी नजर में ---------- ७

जीवन दर्शन ----------१३

विविध विशेषताओं के संगम---------- ३९

आगमों में आचार्य का स्वरुप और आचार्य श्री आनन्द ऋषि ----------४४

शिक्षा- प्रसारक श्री आनन्दाचार्य---------- ५१

प्राकृतभाषा एवं श्रमण संस्कृति के प्रवकता---------- ५६

आचार्य़ श्री एक जीवन दर्शन---------- ६३

महर्षि आनन्द और उनका तत्वचिन्तन---------- ६६

कर्तव्यनिष्ठ सेवा की साकारमूर्ति----------७९

आचार्य प्रवर श्री आनन्दऋषिजी का ----------८४

अन्तरंग चित्र, शब्द पटल पर आगमों आदर्श में आचार्य श्री का व्यकितत्व बिम्ब---------- ९२

वाक् संयमी किन्तु कर्मयोगी---------- ९५

आचार्य श्री का अनुपम जीवन ----------११०

धर्म के प्रचार-प्रसार में आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी का योगदान ----------११२

श्रमण समघ के स्वर्ण कंकण की एक दीप्तिमान मणि----------१२१

जीवन-स्पर्शी प्रवक्रता आचार्य देव ---------- १२४

श्री आनन्द ऋषि का प्रवचन-विश्लेषण ---------- १२८

श्रद्धार्चन

कोटि-कोटि अभिनंदन ----------३

धर्म और संस्कृति के सजग प्रहरी----------६

ज्योतिर्मय जीवन----------१२

तुम सलामत रहो हजार वर्ष ---------- ३६

श्री आनन्द अभिनंदन ---------- ३७

श्रद्धार्चन आचार्य़ देव के प्रति---------- ५०

श्रमणसंघ की वरिष्ठ विभूति---------- ५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिनन्दन बेला आई----------५५
आनन्दमूर्ति आचार्य श्री आनन्द ऋषि ----------५८
आनन्ददाता आनन्दऋषि जी----------६१
अभिनन्दना ---------- ६
अभिनन्दन एक जागरुक चेतना का----------७३
महाराष्ट्र का कोहेनूर----------७५
आनन्द पंचक अभिनन्दन ---------- ८२
अभिनन्दन शत-शत वार ----------८७
श्रद्धा के दो फूल----------८८
तुम महान हो ----------९९
वंदना----------९१
आणंद पंचयथुई ---------- ९४
आनन्द ऋषि भजामि----------९७
श्रद्धासुमन---------- ९८
आचार्य प्रवर का अभिनन्दन---------- १००
भावाज्जलि----------१०१
सुमनाज्जलि ---------- १०२
शत-शत वंदन---------- १०२
आपांणां आचार्य़ श्री---------- १०३
उदारता की मंजुल मूर्ति---------- १०४
मेरे प्रणाम हैं----------१०५
आनन्द के चरणों में ---------- १०६
श्रद्धा के सुमन----------१०७
आचार्यनन्द पञ्चक ---------- १०८
उनको वन्दना हमारी है---------- १०९
श्रद्धा सुमन----------१११
आचार्या-अर्चना ----------११६
महाराष्ट के मान-गौरव---------- ११७
आनन्द के मान-सरोवर----------११८
चम-चम चमके है----------११९
अनन्त-अनन्त श्रद्धा के अमर केन्द्र ---------- १२३
हार्दिक श्रद्धार्चन ---------- १२३
श्रद्धा के सुमन----------१२७
श्रद्धार्चन---------- १३९
तुभ्यंनम ---------- १४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीय खण्ड - प्रवचन पंखुडिर्यां

उपदेश श्रवण का पात्र ---------- १४३
जीवन विकास का सोपान-अनुशासन ---------- १४८
आचार परमो धर्म ---------- १५४
मानव जीवन का सदुपयोग ---------- १५८
जीवन महल की नींव विचार ---------- १६२
मीठी बानी बोलिए ---------- १६५
सहयोग सर्वत्र आवश्यक ---------- १६६
प्रीत की रीत क्या है ---------- १७४
सुख की खोज ---------- १७७
जाकी रही भावना जैसी ---------- १८१
संगत कीजे साधु की ---------- १८६
कम खाए, सुख पाए ---------- १९०
भावना भावनाशिनी ---------- १९४
कषायमुक्ति किलमुक्तिरेव ---------- १९९
मन की महिमा ---------- २०४
सुख का साधन-धर्म ---------- २१०
ऊंघै मत बटोही ---------- २१६
गुण पूजा करिए ---------- २२३

तृतिय-खण्ड - धर्म और दर्शन

भारतीय दर्शन के सामान्य सिद्धान्त – श्री विजय मुनि शास्त्री ---------- २२९
जैनदर्शन में अजीव तत्व – श्री पुष्करमुनिजी ---------- २३९
निश्चय और व्यवहार किसका आश्रयलें – डॉ. सागरमल जैन ---------- २४८
शून्यवाद और स्यादवाद – प्रो. दलसुख मालवणीया ---------- २६५
नयवाद सिद्धान्त और व्यवहार की तुला पर – डॉ. कृपाशंकर व्यास ---------- २७०
ज्ञानवाद एक परिशीलन – श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री ---------- २७७
स्यावाद सिद्धान्त एक अनुशीलन – श्री देवकुमार जैन ---------- ३०६
जैन रहस्यवाद बनाम अध्यात्मवाद – श्रीमती पुष्पलता जैन ---------- ३३०
जैन- दर्शन का कबीर-साहित्य पर प्रभाव – विद्यावती जैन ---------- ३४२
धर्म का सार्वभौम रुप – प्रवर्तक श्री विनयमुनिजी ---------- ३५४
पंचास्तिकाय में पुदगल – डॉ. हुकमचन्द पार्श्वनाथ संगवे ----------
धर्म का वैज्ञानिक विवेचन – डॉ. वीरेन्द्रसिंह ---------- ३६८
कर्म-सिद्धान्त भाग्य-निर्माण की कला – श्री कन्हैयालाल लोढ़ा ---------- ३७८
नयवाद सिद्धान्त और व्यवहार की तुला पर – श्री श्रीचन्द चोरड़िया ---------- ३९२
अपरिग्रह और समाजवाद एक तुलना – श्री सौभाग्यमल जैन ---------- ४००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन आचार संहिता – मुनि श्री सौभाग्यमलजी----------४०४
जैन साहित्य में क्षेत्र-गणित – डॉ. मुकुटबिहारीलाल अग्रवाल----------४२२
चतुर्थ-खण्ड - प्राकृत भाषा और साहित्य
प्राकृतभाषा उदगम विकास और भेद- प्रभेद – मुनि श्री नगराजजी ---------- १
पाईए- भासा – श्री चन्दनमुनि---------- ३२
प्राकृ तथा अर्धमागधी में – प्रो. एस. एस. फिसके----------४२
अन्तर और ऐक्य प्राकृक भाषा का व्याकरण परिवार – महासती श्री धर्मशीलाश्रीजी ---------- ४६
प्राकृत-वाड्-मय में शब्दालंकार – डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी ----------५५
प्राकृत साहित्य की विविधता और विशालता – श्री अगरचन्द नाहटा---------- ६३
अक्षरविज्ञान एक अनुशीलन – मुनि श्री मोहनलालजी---------- ६९
अपभ्रंश में वाक्य-संरचना के सांचे – डॉ. के. के. शर्मा----------७८
राजस्थानी-भाषा में प्राकृत-अपभ्रंश के प्रयोग – डॉ. प्रेमसुमन जैन----------८५
विक्रमोर्वशीय नाटक के चतुर्थ अंक के प्राकृत अपभ्रंश पधों का मूल्यांकन – डॉ. राजाराम जैन ---------- ९३
प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार में आचार्य श्री का योगदान – श्री बदरीनारायण शुक्ल----------१०१
पंचम-खण्ड - ईतिहास और संस्कृति
जैन घर्म का सांस्कृतिक मूल्यांकन – डॉ. नरेन्द्र भानावत----------१०५
जैन श्रमणसंघ समीक्षात्मक परिशीलन – डॉ. छगनलाल शास्त्री---------- ११५
क्या जैन सम्प्रदायों का एकीकरण संभव है – श्री जवाहरलाल मुणोत---------- १५१
श्री कृष्ण का वासुदेवत्व जैनद्रष्टि – श्री महावीर कोटिया----------१५५
पुरतत्व-मीमांसा – श्री जिनविजय मुनि ----------१५८
जैन संस्कृति में संगीत का स्थान – श्रीमती निरुपमादेवी खंडेलवाल----------१८१
ग्रन्थो की सुरक्षा में राजस्थान के जैनों का योगदान – डॉ. कस्तुरचन्द कासलीवाल ---------- १८७
मथुरा का प्राचीन जैन-शिल्प – श्री गणेशप्रसाद जैन----------१९४
जैन साहित्यांतील काही प्रमुख आचार्य व त्यांचे प्रमुख ग्रन्थ – प्रो. ए. एस. मोरे----------२०७
ऋषि संप्रदाय वे पांच सौ वर्ष – श्री कुन्दन ऋषि ---------- २१८
षष्ठ-खण्ड – अंग्रेजी
Acharya Anand Rishijee- A Redeemer Of The Moderm Wasteland – Satishkumar Jain----------1
Realigious Awakening – Dr. A. N. Upadhye ----------6
The Vedic Gayatri Mantra& Its Metemorphosis In The Jainism – Dr. N. M. Kansara ----------8
The Jaina Idea Of Universe – Prof. M. S. Ranadive---------- 17
Human Nature and Destiny in Jainism – Dr. Bashishtha Narain Tripathi---------- 23
A Reflction On the Life of Tirthankara Mahavira – Dr. J. C. Sikdar---------- 37
Varahamihira and Bhadrabahu – Dr. Ajay Mitra Shastri---------- 52

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org